

# महाराणी के लिखे गीत जो गाये बजाये गये

- डॉ. महेन्द्र भानावत

मेवाड़ राजवंश का यह सौभाग्य रहा कि उसके राणा-महाराणा तो काव्य प्रणेता थे ही किन्तु राणी-महाराणी भी काव्य- रचना करने में बड़ी निपुण और निष्णात थीं। इस राजवंश के 74 वें उत्तराधिकारी महाराणा भोपालसिंह ऐसे शासक हुए जिनकी परिणिता महाराणी बीरदकुंवर ने अपने समय में ऐसे कई गीत-भावनाएँ लिखीं जो लोकगीतों की तरह लोकप्रिय हुई और गायक जातियों की कंठहार बनीं।

बीरदकुंवर जिन्हें बड़थकुंवर भी लिखा गया, का जन्म जयपुर के अचरोल ठिकाने के राजावत ठाकुर केसरी सिंह के घर संवत् 1953 में हुआ। मात्र चौदह वर्ष की उम्र में इनका विवाह भोपालसिंह से कर दिया गया। ये बड़े ही सरल स्वभाव की धर्मनिष्ठ महिला थीं। इनका अधिक समय ईश-भक्ति तथा पूजा-पाठ में व्यतीत होता था। हिन्दू धर्म के प्रति ये पूर्ण आस्थावान थीं।

बीरदकुंवर ने मेवाड़ में बहुप्रचलित पणिहारी, पचरंग लेरयो, खेलण दो गणगोर, जला, नागजी, अनोखाकंवर जी, घूमर, ईडोणी, कांगसियो, नैणा रा लोभी, कलाली, जमाई प्यारा लागे, फागनियों, नाव री असवारी, मूमल, माछर, कुरजां, घोड़ी, बड़लो, सरवरिया री पाल, गेह रो जी फूल गुलाब रो, चम्पाबाग, सिकार, धूसो, हिन्दुवा सूरज, बाज्या जंगी ढोल, सियालो, केसरिया बालम, गज-गज लांबा केस जैसी रागों और तर्जों में कई गीतों, भजनों तथा भावनाओं की रचना की।

बीरदकुंवर के लिखे गीतों और भावनाओं का एक संग्रह श्री माताजी रा गीत व श्री जी हजूर की भावना नाम से बहुत पहले प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में कहीं भी प्रकाशक, रचनाकार और प्रकाशन वर्ष का उल्लेख नहीं मिलता। इसमें 95 गीत-भावना कुल 128 पृष्ठों में संकलित हैं। इनमें महाराणा को अजर अमर रखने की अनुनय विनयभरी अरदास मिलती है। गीत की प्रत्येक पंक्ति में देवी-देवता के प्रति राणीजी की अटूट आस्था, अखंड विश्वास तथा उनके प्रति सर्वस्व समर्पण की भावना अभिव्यक्त हुई मिलती है। मेवाड़ राजघराने के इष्ट भगवान एकलिंगनाथ के प्रति उनके हृदय के स्वाभाविक उद्गार इस प्रकार व्यक्त किये हैं :

सम्भूजी ऊभा राणी रायजी

सेवा करावे आपरी भारी हो।

म्हारा एकलिंगनाथ, म्हारा संभूनाथ

मेवाड़ नाथ नैं अमर अटल कर दीजो हो।

सम्भूजी ऊभी चाकर राजावत

लुल-लुल लागे आपरे पांवां हो।

म्हारा एकलिंगनाथ, म्हारा संभूनाथ

चाकर रो चूड़ो चूंदड़ अमर भाल कर दीजो हो।

राजमाता



कईयन मांगु हो अन्दाता तर्ज तथा मारी राखो नी मुरजाद उण री राग में निबद्ध श्री माताजी के गीत में भी राणीजी ने माता आवरांजी से चूड़ा चूंदड़ और अमर सुहाग की कामना की है। इस तरह -

कईयन मांगु हो आवरी माताजी कईयन मांगु हो  
म्हारा सरण आया री लज्या राखो जोगमायाजी।  
अन्दाता ने अमर कर दीजो मैं तो योही मांगु हो,  
मोरी माय आवरी माताजी कईयन मांगु हो।  
पड़ चरण मांय करूं विनती सुणजो चित्त लगाय  
अन्दाता ने अमर करदीजो राज रा हजार हाथां सूं  
करजो माय जोगमायाजी कईयन मांगु हो।

प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ ने बताया कि विवाहोपरान्त महाराणीजी पूरे मेवाड़ी रंग में रंग गई थीं। उन्हें मेवाड़ ठिकाने में आने पर गर्व की अनुभूति होती रही। कई बाद उन्होंने कहा भी कि जणी घर में मीरां माता पधार्या वणी घर म्हूं मोड़ बांध आई हूं अर्थात् जिस घर में मीरां जी विवाह कर पधारीं उस घर में मैं भी विवाहिता बन आई हूं। प्रो. देवकर्ण के पास महाराणीजी द्वारा प्रकाशित करवाया गया गीतों का



फत्ती बाई

दूसरा संस्करण सुरक्षित रखा हुआ है जो उदयपुर के नवजीवन प्रेस से छपा। ई. 1975 का यह संग्रह श्री माताजी रा भजन, श्री एकलिंग जी रा भजन,

श्री महाराणा सा श्री भोपाल सिंह जी री भावना नाम निकला। इसमें रचयित्री व प्रकाशिका के रूप में बजरामाताजी सर्वश्रद्धा विलास उदयपुर दिया हुआ है। प्रो. लक्ष्मीनारायण धायबाई ने बताया कि राजमाताजी मेवाड़ की प्रमुख पूज्या आवरीमाता, अंबामाता के प्रति बड़ी श्रद्धानिष्ठ थीं। प्रायः उनके दर्शनार्थ वे जातीं और नई-नई भावनाएँ लिखतीं। उनके साथ गाने वाली बाइयां भी होतीं जो उनकी भावनाओं के अनुरूप माताजी की शोभा एवं महिमा का बखान करतीं। मेवाड़ के सभी ठिकानों में उनके लिखे गीतों और भावनाओं की लोकप्रसिद्धि थी। फत्तीबाई, जसोदाबाई, देऊबाई, उम्मेदीबाई, लच्छूबाई, रतनाबाई, जानकीबाई, नारायणीबाई, मांगीबाई ने बड़ा नाम कमाया। महाराणा भोपालसिंह ने उन भावनाओं की एक दर्जन के करीब ग्रामोफोन रेकॉर्ड भी भरवाई।

अब वह जमाना नहीं रहा। सब कुछ बड़ी तेजी से बदलता जा रहा है तब भी देवी-देवताओं से संबंधित राणीजी की लिखी भावनाएँ उतनी ही आस्था, श्रद्धा, विश्वास और मनोयोग से गाई जा रही हैं। •

## लेखकों से आग्रह

- स्वर सरिता के लिए मौलिक एवं स्तरीय रचनाएं आमंत्रित हैं।
- रचनाएं टंकित होनी चाहिए। कम्प्यूटर से कम्पोज की गई रचनाओं को प्राथमिकता दी जायेगी। रचनाओं के साथ अपेक्षित रंगीन चित्र भी होने चाहिए।
- रचनाओं की स्वीकृति यथा-समय प्रेषित कर दी जायेगी। किन्तु अस्वीकृति की स्थिति में वे रचनाएं ही लौटाई जायेंगी जिनके साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा संलग्न होगा।
- रचनाओं की डाक में गुम होने की जिम्मेदारी स्वर सरिता की नहीं है।
- लेखकों को निर्धारित मानदेय की व्यवस्था है।

- सम्पादक

सम्पर्क -

सम्पादक

स्वर सरिता, हल्दिया हाउस  
जौहरी बाजार, जयपुर-302003  
फोन : 0141-2570517, 2572666

## लोक-वाद्य

### घन वाद्य

डण्डियाँ, घण्टा, घण्टी, घड़ियाल, थाली और तसली, चिम्पिया, चूड़ियाँ, ताल, झाँझ, टिकौर, मंजीरा, करताल, रमझौल, घुरालियो, झालर, गरासिया की लेजिम, मोरचंग, श्रीमण्डल, भैरों जी के घुंघरू, घुंघरू, चिमटा, टुनटुना आदि।

### अवनद्ध वाद्य

चंग, ढोलक, घेरा, डफ, खंजरी, मादल, नटों की ढोलक, गुमका, महाराष्ट्र की ढोलकी अथवा नाल, दमामा, कुण्डी, डमरू, धौंसा, नगाड़ा निशान, डेरू या ढक, ढोल, नगाड़ा, तासा, कमट, ढाक, मटकी, दुक्कड़, सम्बल, डिण्डिमा या तबुल, पाबू जी के माटे आदि।

### सुषिर वाद्य

अलगोजा, पैली, सतारा, टोटो, नढ़, सुरनई, पुंगी, मुरला, तुरही, भूँगल, सिंगी, बर्गू, मशक, पेपा, कर्ना, बाँकिया, नागफनी, तारपी आदि।

### तत् वाद्य

एकतारा, दोतारा, चौतारा, जन्तर, रबाब, रावणहत्था, मेओ का चिकारा, गरासियों का चिकारा, जोगिया सारंगी, गुजरातन सारंगी, बनम, धानी सारंगी, सिन्धी सारंगी, कमाँयचा, भपंग, सुरिन्दा, दुकाको, अलाबु सारंगी, तुनतुना, गोपी जंत्र आदि।



# मेवाड़ की पहली ग्रामोफोन रेकार्ड

- डॉ. महेन्द्र भानावत



राजस्थान के मेवाड़ राजघराने का योगदान शौर्य प्रदर्शन की दृष्टि से ही नहीं अपितु साहित्य, संगीत एवं कला के क्षेत्र में भी बड़ा मूल्यवान रहा है। यहाँ न केवल साहित्यकारों तथा कलारसिकों ने संरक्षण पाया बल्कि स्वयं महाराणा-महाराणियों ने भी अपने मौलिक सृजन द्वारा इतिहास में अमिट छाप छोड़ी है।

संगीतरसज्ञ महाराणा भूपालसिंह ने अपने समय में कई उत्कृष्ट कलाकार एवं कलावंत तैयार किये। उनकी पत्नी महाराणी बड़थकुंवर बड़ी सरल स्वभाव की धर्मनिष्ठ महिला थी। पाणहारी, जला, घूमर, कांगसियो जैसे बहुप्रसिद्ध लोकगीतों की तर्ज पर उन्होंने भावनाओं की रचना की। इन भावनाओं का एक संग्रह 'श्री माताजी रा गीत व श्री हजूर की भावना' नाम से छपा जिसमें उनकी लिखी 95 भावनाओं का संग्रह है। स्वर माधुर्य की दृष्टि से मेवाड़ के सभी ठिकानों में ये भावना महिलाओं की कंठ-हार बनीं।

इन भावनाओं की लोकप्रियता से प्रभावित हो महाराणा भूपालसिंह ने इनके ग्रामोफोन रेकार्ड तैयार करवाये। इसके लिये नावघाट की दस गायिकाओं का चयन किया गया। लगभग एक माह तक कभी गुलाबबाग, कभी समोरबाग तो कभी सहेलियों की बाड़ी में रिहर्सल की गई। इस कार्य के लिए दरबार की ओर से नंदलाल भंडारी, मेघराज धाबाई, ब्रजलाल जेठी तथा गमेरसिंह चौहान मुकर्र किय गये। एक माथुर सा थे जो संगीत गायकी के बड़े जानकार थे। वे सब समझाते। गीत के आरोह-अवरोह और गायन विधि की जानकारी देते।

गाने वाली ढोलवालियों में फत्तीबाई,

जसोदाबाई, देऊबाई सबकी परीक्षा ली गई। इनमें से फत्तीबाई सबसे सवाई निकली। माथुर सा फत्तीबाई के साथ जसोदाबाई और देऊबाई को लेकर बंबई गये। वहाँ आर्य निवास होटल में ठहरे। एक माह रुकना हुआ। आठ दिन रिहर्सल हुई। शेष दिन रिकॉर्डिंग। ग्रामोफोन रेकार्ड की निर्माता नेशनल ग्रामोफोन रेकार्ड मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड थी जबकि सेल प्रोप्राइटर उदयपुर के भटनागर ब्रदर्स थे। इस कम्पनी द्वारा 22 भावना की कुल 11 रेकार्ड भरी गई। रेकार्ड पर कहीं उदयपुर पार्टी तो कहीं मिसेज फत्ती लिखा हुआ मिलता है।

फत्तीबाई (80) ने बताया कि ये भावना महाराणी सा द्वारा लिखी गई थी और उन्हीं की प्रेरणा से इनकी रेकार्ड बनीं। राणीजी फत्तीबाई को रामप्यारी कहकर बुलवाते थे। अकेली गाने वाली केवल फत्तीबाई ही थी। समूह में भी प्रमुख स्वर इन्हीं का था। जसोदा और देऊ सहायक स्वर के रूप में टेक को उठातीं। पहली बार जब तीनों की साथ रेकार्ड भरी गई तो भरते-भरते चूड़ी फट गई तब इसकी सूचना दरबार को दी गई। दरबार का आदेश हुआ कि जिसकी आवाज अच्छी हो, उसकी भरी जाय। स्वाभाविक था, तब फत्तीबाई ही उभर कर आई।

फत्तीबाई द्वारा गाई गई भावनाओं में मुख्य भावना थीं - (1) रघुवंश जहाँ चमक रहा है (2) हिंदवाणी सूरज घणा नोखीला हो (3) म्हाने म्हारा प्राणपति लागो प्यारो (4) पेच्यां सोहे हो अन्दाता (5) जग के पालनहार (6) प्रजापाल प्रथीपाल। उदयपुर पार्टी के नाम से रेकार्ड की गई भावनाओं में मुख्य थीं - (1) घणा ने रूफाला हिन्दूपत राजा (2) मेवाड़ा अन्दाता मेरे प्राण के प्यारे (3) कईय न मांगू हो आवरी माताजी (4) बना सा हस्ती तो कजली देश रो (5) आप अमर तपो हिन्दुआ सूरज (6) लगन लिखावत मोरे मेल पधारो (7) शंभुजी म्हें तो राज रा



दरसन। ये भावना संवत 2001 में भरी गई।

फत्तीबाई राजदरबार में ही नहीं, ठिकानों में भी सम्मान के साथ बुलाई जाती तब दादी उमेदीबाई तथा पिता कजोड़जी साथ होते जो क्रमशः ढोलक एवं हारमोनियम बजाते। हारमोनियम सबसे पहले महाराणा फतहसिंह ने दिल्ली में खरीदवाया। मेवाड़ ठिकाने का यह पहला हारमोनियम था। फत्तीबाई ने बताया कि महाराणा बड़े स्वाभिमानी थे। अंग्रेजों से सदा दूर रहते। कजोड़जी महाराणा के खास मर्जीदान थे।

कजोड़जी ही नहीं, इनके पूर्वजों ने भी महाराणा के साथ रहकर अपनी पूरी स्वामीभक्ति दिखाई। महाराणा अरसीसिंह (अड़सी) के साथ सेवाजी ने गायक-रणबाज के रूप में बूंदी राजा के खिलाफ युद्ध कर अमरगढ़ के पास सुई गांव में वीर गति प्राप्त की ओर जुझार कहलाये। अरसीसिंह के बाद महाराणा भीमसिंह हुए जिन्होंने सेवाजी के वंशधर को सम्मानसूचक चांदी का गोटा बख्शा जिससे ये गोटेदार कहलाये। शीशम की लकड़ी का यह गोटा चांदी की जड़ाई से शोभित शेरमुखी था। इस सम्बन्ध में यह पंक्ति सुनने का मिलती है- 'भीम अंदाता गोटो बगस्यो।' यही नहीं, इन्हें दुवायता की पदवी भी मिली जिसके अनुसार इन्हें गणगौर जैसी विशिष्ट सवारियों तथा लवाजमों में दोहे देने का सम्मानजनक हक मिला।

फत्तीबाई के पिता कजोड़जी रोड़ाजी के गोद में गये। रोड़ाजी के पिता किशनजी और किशनजी के पिता भूराजी भी अच्छे गायक और वीर भावना से ओतप्रोत थे। फत्तीबाई को विविध तर्जों वाले अनेक लोकगीत कंठस्थ हैं। राजस्थान में प्रारम्भ हुए आकाशवाणी केन्द्र की पहली लोकगीत गायिका के रूप में इनके स्वर से प्रभावित होकर अन्य केन्द्रों ने भी इनके गीतों का प्रसारण किया। दिल्ली में प्रथम प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू ने भी इन्हें सुनकर सराहा।

फत्तीबाई राजस्थानी मांड गाने की भी समर्थ कलाकार हैं। उन्होंने बताया कि मांड लोकगीत की तरह साधारण गायकी नहीं है अपितु क्लिष्ट और ऊँची राग लिये है इसलिये हर कोई मांड नहीं गा सकता। सिनेमा और टीवी के प्रभाव ने न केवल पारम्परिक गायकी को नुकसान पहुँचाया अपितु उसे भोंडा भी बनाया है। ●



Corrected sequence as recorded  
in CD / recordings  
Tuner used also indicated  
in some cases

## Mewari records

- |             |   |
|-------------|---|
| 1] NG 8687  | 3] शंभूजी मैतो राज दर्शन ( एकलिंगजी ) ( जल्ला ) |
| 2] NG 8688  | 2] शंभूजी कानाने कुंडल ( एकलिंगजी ) ( जल्ला )   |
| 3] NG 8692  | 4] आप अमर तपो हिन्दुआण ( ईडोणी )                |
| 4] NG 8693  | 5] लगन लिखावत मारे महल पधारो                    |
| 5] NG 8703  | 6] वनासा हस्ती तो कजली देसारा छगन वाई ( जल्ला ) |
| 6] NG 8704  | 7] वनासा लगन तो जोशी हाटरा                      |
| 7] NG 8695  | 8] अनदाता अनदाता लगन लिखावत महल पधारो           |
| 8] NG 8717  | 9] मेवाड़ा बना मेरे प्राण पति - मिसेज फत्ती     |
| 9] NG 8699  | 10] पेच्या सोहे हो अन्दाता - मिसेज फत्ती        |
| 10] NG 8705 | 11] माने मारा प्राणपति लागे प्यारा - छगन वाई    |
| 11] NG 8709 | 12] पल पल वांरुणो अन्दाता ऊपर प्राण             |
| 12] NG 8715 | 13] मेवाड़ा अन्दाता मेरे प्राण के प्यारे        |
| 13] NG 8694 | 14] प्रजापाल पृथ्वीपाल                          |
| 14] NG 8711 | 1] जगके पालनहार - मिसेज फत्ती                   |

[45 minutes]